



Mr.deepak Shrivastava

24 Oct 1984

12:40 PM

Rourkela

Model: Web-KundliPhal

Order No: 119288101

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: पुल्लिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 24/10/1984  
दिन \_\_\_\_\_: बुधवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 12:40:00 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 17:03:03 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Rourkela  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 22:13:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 84:53:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: 00:09:32 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 12:49:32 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: 00:15:49 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 15:01:02 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 05:50:46 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 17:18:26 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 11:27:39 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: दक्षिणायन  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: दक्षिण  
ऋतु \_\_\_\_\_: हेमन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 07:24:52 तुला  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 11:09:11 मकर

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: मकर - शनि  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: तुला - शुक्र  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: चित्रा - 4  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: मंगल  
योग \_\_\_\_\_: विष्कुम्भ  
करण \_\_\_\_\_: नाग  
गण \_\_\_\_\_: राक्षस  
योनि \_\_\_\_\_: व्याघ्र  
नाड़ी \_\_\_\_\_: मध्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: शूद्र  
वश्य \_\_\_\_\_: मानव  
वर्ग \_\_\_\_\_: मृग  
युँजा \_\_\_\_\_: मध्य  
हंसक \_\_\_\_\_: वायु  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: री-रीतेश  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र - रजत  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: वृश्चिक



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions





## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
 पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
 माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
 जाति \_\_\_\_\_ :  
 गोत्र \_\_\_\_\_ :

| कैलेंडर    | वर्ष          | मास     | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|---------|----------------|
| राष्ट्रीय  | शक : 1906     | कार्तिक | 2              |
| पंजाबी     | संवत : 2041   | कार्तिक | 9              |
| बंगाली     | सन् : 1391    | कार्तिक | 7              |
| तमिल       | संवत : 2041   | आइपसी   | 8              |
| केरल       | कोल्लम : 1160 | तुलम    | 8              |
| नेपाली     | संवत : 2041   | कार्तिक | 8              |
| चैत्रादि   | संवत : 2041   | कार्तिक | कृष्ण 15       |
| कार्तिकादि | संवत : 2041   | आश्विन  | कृष्ण 15       |

### पंचांग

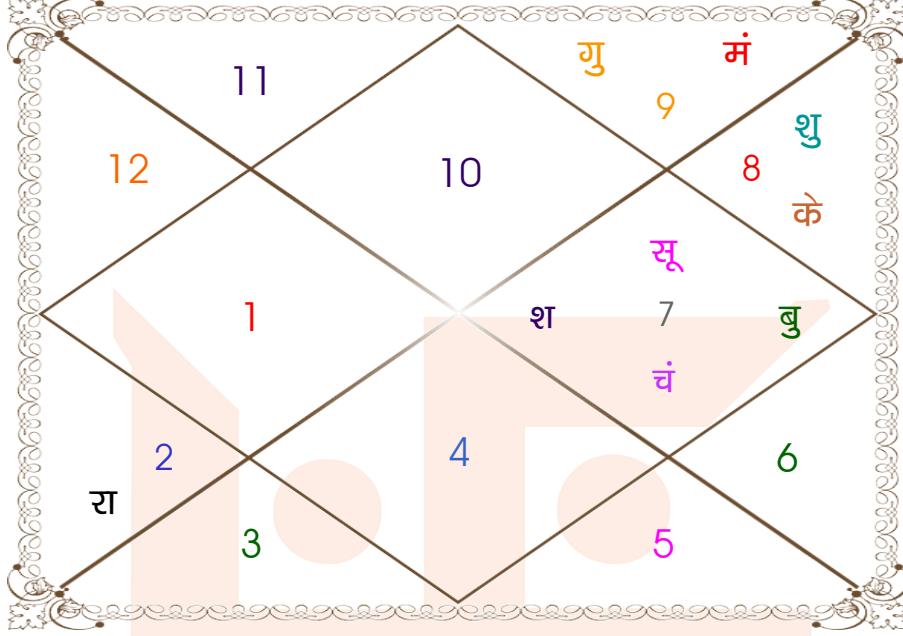
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 15  
 तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 17:38:11  
 जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 15  
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : चित्रा  
 नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 16:06:59 घंटे  
 जन्म योग \_\_\_\_\_ : चित्रा  
 सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
 योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 14:47:08 घंटे  
 जन्म योग \_\_\_\_\_ : विष्कुम्भ  
 सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : चतुष्पाद  
 करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 07:25:15 घंटे  
 जन्म करण \_\_\_\_\_ : नाग  
 भयात \_\_\_\_\_ : 44:16:42  
 भभोग \_\_\_\_\_ : 52:54:08  
 भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : मंगल 1 वर्ष 1 मा 20 दि

### घात चक्र

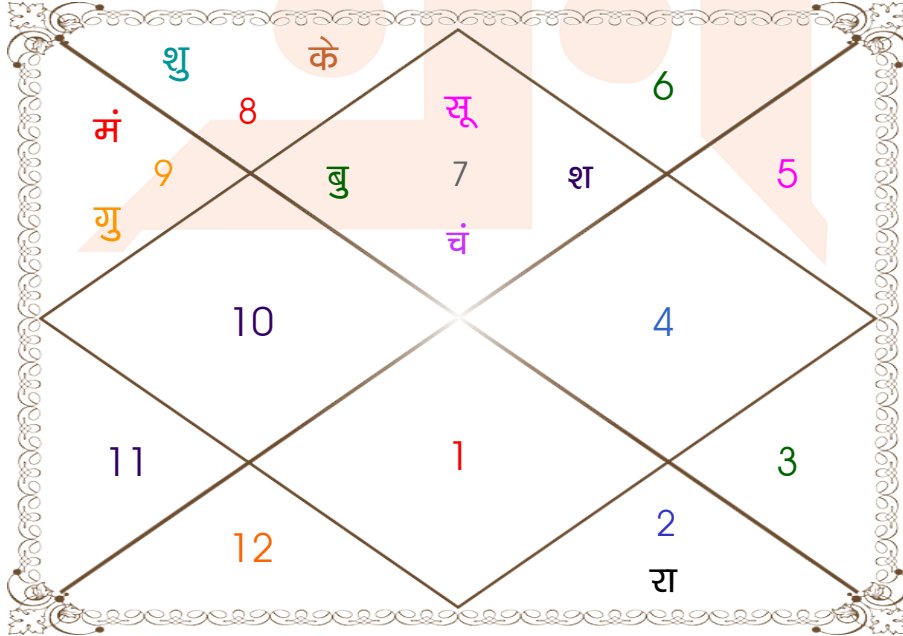
मास \_\_\_\_\_ : माघ  
 तिथि \_\_\_\_\_ : 4-9-14  
 दिन \_\_\_\_\_ : गुरुवार  
 नक्षत्र \_\_\_\_\_ : शतभिषा  
 योग \_\_\_\_\_ : शुक्ल  
 करण \_\_\_\_\_ : तैतिल  
 प्रहर \_\_\_\_\_ : 4  
 वर्ग \_\_\_\_\_ : सिंह  
 लग्न \_\_\_\_\_ : कन्या  
 सूर्य \_\_\_\_\_ : कन्या  
 चन्द्र \_\_\_\_\_ : धनु  
 मंगल \_\_\_\_\_ : तुला  
 बुध \_\_\_\_\_ : कर्क  
 गुरु \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
 शुक्र \_\_\_\_\_ : धनु  
 शनि \_\_\_\_\_ : सिंह  
 राहु \_\_\_\_\_ : मकर

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



# लग्न कुण्डली और दशा

## लग्न कुंडली

|          |          |                     |  |
|----------|----------|---------------------|--|
|          |          | रा                  |  |
|          |          |                     |  |
| ल        |          |                     |  |
| गु<br>मं | के<br>शु | श<br>चं<br>सू<br>बु |  |

## लग्न कुंडली

|          |         |                      |
|----------|---------|----------------------|
| रा       |         |                      |
|          |         |                      |
|          | ल       |                      |
| बु<br>सू | श<br>चं | मं<br>गु<br>शु<br>के |

विंशोत्तरी  
मंगल 1वर्ष 1मा 20दि  
मंगल

24/10/1984

14/12/2098

|        |            |
|--------|------------|
| मंगल   | 14/12/1985 |
| राहु   | 14/12/2003 |
| गुरु   | 14/12/2019 |
| शनि    | 14/12/2038 |
| बुध    | 14/12/2055 |
| केतु   | 14/12/2062 |
| शुक्र  | 14/12/2082 |
| सूर्य  | 13/12/2088 |
| चन्द्र | 14/12/2098 |

योगिनी  
मंगला 0वर्ष 1मा 28दि  
धान्या

23/12/2022

23/12/2025

|         |            |
|---------|------------|
| धान्या  | 24/03/2023 |
| भ्रामरी | 24/07/2023 |
| भद्रिका | 23/12/2023 |
| उल्का   | 23/06/2024 |
| सिद्धा  | 22/01/2025 |
| संकटा   | 22/09/2025 |
| मंगला   | 23/10/2025 |
| पिंगला  | 23/12/2025 |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions





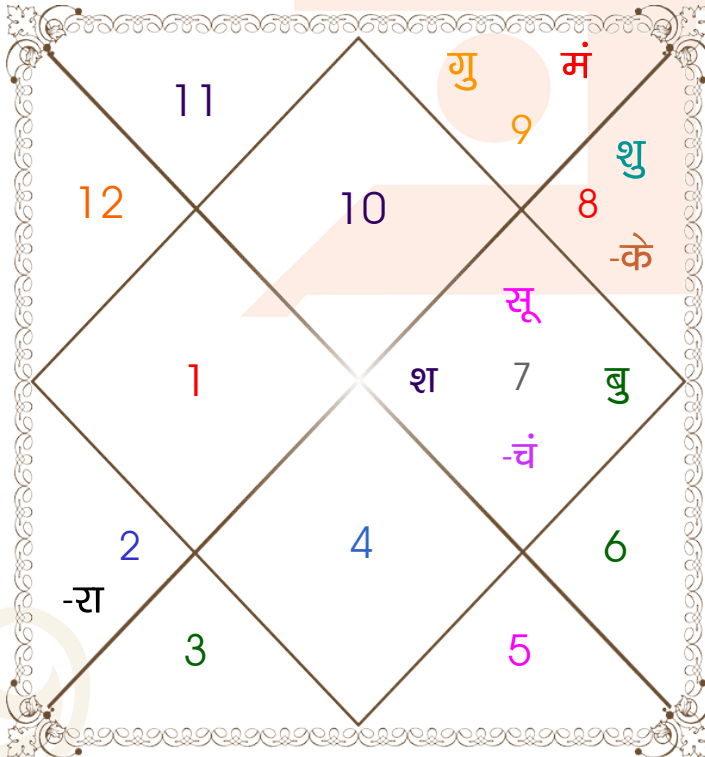
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह    | व | अ | राशि   | अंश      | गति       | नक्षत्र    | पद | नं. | रा    | न     | अं.   | स्थिति     |
|---------|---|---|--------|----------|-----------|------------|----|-----|-------|-------|-------|------------|
| लग्न    |   |   | मक     | 11:09:11 | 394:28:12 | श्रवण      | 1  | 22  | शनि   | चंद्र | मंगल  | ---        |
| सूर्य   |   |   | तुला   | 07:24:52 | 00:59:49  | स्वाति     | 1  | 15  | शुक्र | राहु  | राहु  | नीच राशि   |
| चंद्र   |   |   | तुला   | 04:29:56 | 15:05:35  | चित्रा     | 4  | 14  | शुक्र | मंगल  | शुक्र | सम राशि    |
| मंगल    |   |   | धनु    | 19:48:56 | 00:43:21  | पूर्वाषाढा | 2  | 20  | गुरु  | शुक्र | राहु  | मित्र राशि |
| बुध     | अ |   | तुला   | 16:16:15 | 01:34:34  | स्वाति     | 3  | 15  | शुक्र | राहु  | शुक्र | मित्र राशि |
| गुरु    |   |   | धनु    | 13:58:13 | 00:09:05  | पूर्वाषाढा | 1  | 20  | गुरु  | शुक्र | शुक्र | स्वराशि    |
| शुक्र   |   |   | वृश्चि | 11:17:52 | 01:12:58  | अनुराधा    | 3  | 17  | मंगल  | शनि   | चंद्र | सम राशि    |
| शनि     |   |   | तुला   | 23:17:36 | 00:07:00  | विशाखा     | 1  | 16  | शुक्र | गुरु  | शनि   | उच्च राशि  |
| राहु    | व |   | वृष    | 03:56:14 | 00:02:55  | कृतिका     | 3  | 3   | शुक्र | सूर्य | शनि   | मित्र राशि |
| केतु    | व |   | वृश्चि | 03:56:14 | 00:02:55  | अनुराधा    | 1  | 17  | मंगल  | शनि   | शनि   | मित्र राशि |
| हर्ष    |   |   | वृश्चि | 17:42:39 | 00:03:01  | ज्येष्ठा   | 1  | 18  | मंगल  | बुध   | बुध   | ---        |
| नेप     |   |   | धनु    | 05:32:42 | 00:01:24  | मूल        | 2  | 19  | गुरु  | केतु  | मंगल  | ---        |
| प्लूटो  |   |   | तुला   | 08:23:17 | 00:02:26  | स्वाति     | 1  | 15  | शुक्र | राहु  | राहु  | ---        |
| दशम भाव |   |   | तुला   | 24:04:47 | --        | विशाखा     | -- | 16  | शुक्र | गुरु  | बुध   | --         |

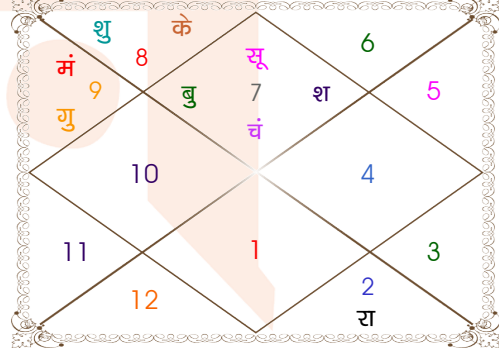
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:38:26

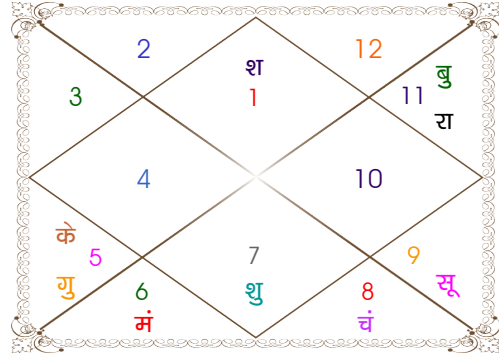
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

| भाव | भाव संधि         | भाव मध्य         |
|-----|------------------|------------------|
| 1   | धनु 28:18:27     | मकर 11:09:11     |
| 2   | मकर 28:18:27     | कुम्भ 15:27:43   |
| 3   | मीन 02:36:59     | मीन 19:46:15     |
| 4   | मेष 06:55:31     | मेष 24:04:47     |
| 5   | वृष 06:55:31     | वृष 19:46:15     |
| 6   | मिथुन 02:36:59   | मिथुन 15:27:43   |
| 7   | मिथुन 28:18:27   | कर्क 11:09:11    |
| 8   | कर्क 28:18:27    | सिंह 15:27:43    |
| 9   | कन्या 02:36:59   | कन्या 19:46:15   |
| 10  | तुला 06:55:31    | तुला 24:04:47    |
| 11  | वृश्चिक 06:55:31 | वृश्चिक 19:46:15 |
| 12  | धनु 02:36:59     | धनु 15:27:43     |

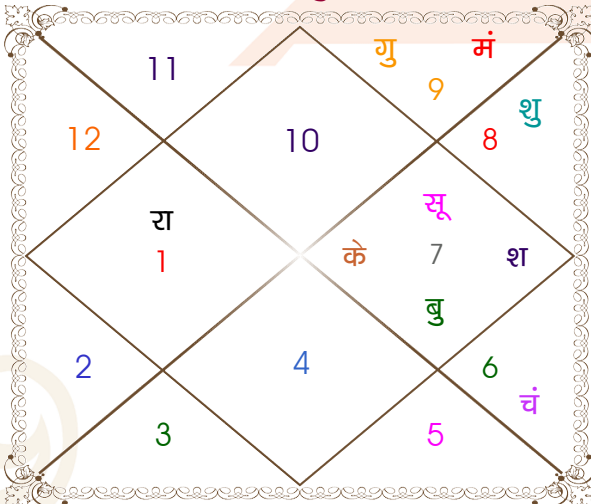
### निरयण भाव चलित

| भाव | राशि             | अंश |
|-----|------------------|-----|
| 1   | मकर 11:09:11     |     |
| 2   | कुम्भ 18:15:54   |     |
| 3   | मीन 23:55:54     |     |
| 4   | मेष 24:04:47     |     |
| 5   | वृष 19:46:53     |     |
| 6   | मिथुन 14:11:43   |     |
| 7   | कर्क 11:09:11    |     |
| 8   | सिंह 18:15:54    |     |
| 9   | कन्या 23:55:54   |     |
| 10  | तुला 24:04:47    |     |
| 11  | वृश्चिक 19:46:53 |     |
| 12  | धनु 14:11:43     |     |

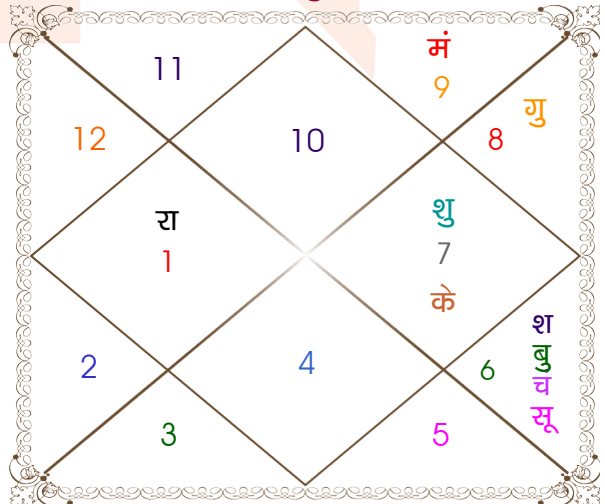
### तारा चक्र

| जन्म    | सम्पत्  | विपत्      | क्षेम     | प्रत्यारि | साधक    | वध          | मित्र      | अतिमित्र |
|---------|---------|------------|-----------|-----------|---------|-------------|------------|----------|
| चित्रा  | स्वाति  | विशाखा     | अनुराधा   | ज्येष्ठा  | मूल     | पूर्वाषाढा  | उत्तराषाढा | श्रवण    |
| धनिष्ठा | शतभिषा  | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती     | अश्विनी | भरणी        | कृतिका     | रोहिणी   |
| मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु   | पुष्य     | आश्लेषा   | मघा     | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त     |

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions





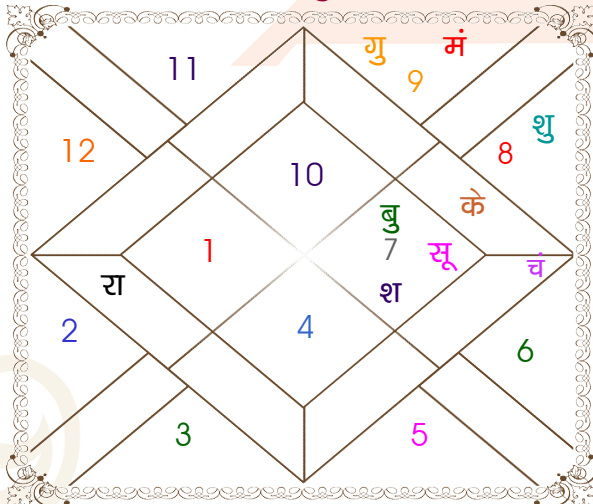
## कारक,अवस्था,रश्मि

| ग्रह  | ----- कारक ----- | ----- अवस्था ----- |                                      |
|-------|------------------|--------------------|--------------------------------------|
|       | चर               | स्थिर              | बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल |
| सूर्य | ज्ञाति           | पितृ               | कुमार भीत उपवेशन 0.14 89 %           |
| चंद्र | कलत्र            | मातृ               | बाल निपीदित शयन 1.71 34 %            |
| मंगल  | अमात्य           | भातृ               | वृद्ध मुदित गमन 3.94 13 %            |
| बुध   | भातृ             | ज्ञाति             | युवा विकल गमन 0.00 58 %              |
| गुरु  | मातृ             | धन                 | युवा स्वस्थ शयन 1.23 33 %            |
| शुक्र | पुत्र            | कलत्र              | वृद्ध निपीदित गमन 2.36 49 %          |
| शनि   | आत्मा            | आयु                | वृद्ध दीप्त भोजन 14.73 19 %          |
| राहु  | ---              | ज्ञान              | मृत मुदित गमन 0.00 23 %              |
| केतु  | ---              | मोक्ष              | मृत मुदित कौतुक 0.00 23 %            |
| कुल   |                  |                    | 24.11                                |

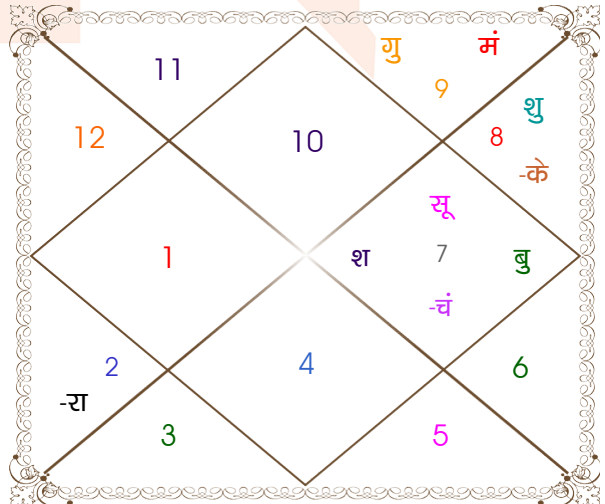
### तारा चक्र

| जन्म    | सम्पत   | विपत       | क्षेम     | प्रत्यारि | साधक    | वध          | मित्र      | अतिमित्र |
|---------|---------|------------|-----------|-----------|---------|-------------|------------|----------|
| चित्रा  | स्वाति  | विशाखा     | अनुराधा   | ज्येष्ठा  | मूल     | पूर्वाषाढा  | उत्तराषाढा | श्रवण    |
| धनिष्ठा | शतभिषा  | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद | रेवती     | अश्विनी | भरणी        | कृतिका     | रोहिणी   |
| मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु   | पुष्य     | आश्लेषा   | मघा     | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त     |

### चलित कुंडली



### लग्न-चलित



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## विंशोत्तरी दशा

### भोग्य दशा काल : मंगल 1 वर्ष 1 मास 20 दिन

| मंगल 7 वर्ष      | राहु 18 वर्ष     | गुरु 16 वर्ष     | शनि 19 वर्ष      | बुध 17 वर्ष      |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 24/10/1984       | 14/12/1985       | 14/12/2003       | 14/12/2019       | 14/12/2038       |
| 14/12/1985       | 14/12/2003       | 14/12/2019       | 14/12/2038       | 14/12/2055       |
| 00/00/0000       | राहु 26/08/1988  | गुरु 31/01/2006  | शनि 17/12/2022   | बुध 12/05/2041   |
| 00/00/0000       | गुरु 20/01/1991  | शनि 14/08/2008   | बुध 26/08/2025   | केतु 09/05/2042  |
| 00/00/0000       | शनि 25/11/1993   | बुध 20/11/2010   | केतु 05/10/2026  | शुक्र 09/03/2045 |
| 00/00/0000       | बुध 14/06/1996   | केतु 27/10/2011  | शुक्र 05/12/2029 | सूर्य 13/01/2046 |
| 00/00/0000       | केतु 02/07/1997  | शुक्र 27/06/2014 | सूर्य 17/11/2030 | चंद्र 15/06/2047 |
| 24/10/1984       | शुक्र 02/07/2000 | सूर्य 15/04/2015 | चंद्र 17/06/2032 | मंगल 11/06/2048  |
| शुक्र 07/01/1985 | सूर्य 27/05/2001 | चंद्र 14/08/2016 | मंगल 27/07/2033  | राहु 29/12/2050  |
| सूर्य 15/05/1985 | चंद्र 26/11/2002 | मंगल 21/07/2017  | राहु 02/06/2036  | गुरु 05/04/2053  |
| चंद्र 14/12/1985 | मंगल 14/12/2003  | राहु 14/12/2019  | गुरु 14/12/2038  | शनि 14/12/2055   |

| केतु 7 वर्ष      | शुक्र 20 वर्ष    | सूर्य 6 वर्ष     | चंद्र 10 वर्ष    | मंगल 7 वर्ष      |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 14/12/2055       | 14/12/2062       | 14/12/2082       | 13/12/2088       | 14/12/2098       |
| 14/12/2062       | 14/12/2082       | 13/12/2088       | 14/12/2098       | 00/00/0000       |
| केतु 11/05/2056  | शुक्र 14/04/2066 | सूर्य 03/04/2083 | चंद्र 14/10/2089 | मंगल 12/05/2099  |
| शुक्र 12/07/2057 | सूर्य 15/04/2067 | चंद्र 02/10/2083 | मंगल 15/05/2090  | राहु 31/05/2100  |
| सूर्य 16/11/2057 | चंद्र 13/12/2068 | मंगल 07/02/2084  | राहु 14/11/2091  | गुरु 07/05/2101  |
| चंद्र 17/06/2058 | मंगल 13/02/2070  | राहु 01/01/2085  | गुरु 15/03/2093  | शनि 15/06/2102   |
| मंगल 14/11/2058  | राहु 12/02/2073  | गुरु 20/10/2085  | शनि 14/10/2094   | बुध 13/06/2103   |
| राहु 02/12/2059  | गुरु 14/10/2075  | शनि 02/10/2086   | बुध 15/03/2096   | केतु 09/11/2103  |
| गुरु 07/11/2060  | शनि 14/12/2078   | बुध 08/08/2087   | केतु 14/10/2096  | शुक्र 25/10/2104 |
| शनि 17/12/2061   | बुध 14/10/2081   | केतु 14/12/2087  | शुक्र 14/06/2098 | 00/00/0000       |
| बुध 14/12/2062   | केतु 14/12/2082  | शुक्र 13/12/2088 | सूर्य 14/12/2098 | 00/00/0000       |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल मंगल 1 वर्ष 1 मा 21 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

| शनि - केतु<br>26/08/2025<br>05/10/2026                                                                                                                                   | शनि - शुक्र<br>05/10/2026<br>05/12/2029                                                                                                                                  | शनि - सूर्य<br>05/12/2029<br>17/11/2030                                                                                                                                  | शनि - चंद्र<br>17/11/2030<br>17/06/2032                                                                                                                                  | शनि - मंगल<br>17/06/2032<br>27/07/2033                                                                                                                                   |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| केतु 19/09/2025<br>शुक्र 25/11/2025<br>सूर्य 15/12/2025<br>चंद्र 18/01/2026<br>मंगल 11/02/2026<br>राहु 13/04/2026<br>गुरु 06/06/2026<br>शनि 09/08/2026<br>बुध 05/10/2026 | शुक्र 16/04/2027<br>सूर्य 13/06/2027<br>चंद्र 17/09/2027<br>मंगल 23/11/2027<br>राहु 15/05/2028<br>गुरु 16/10/2028<br>शनि 17/04/2029<br>बुध 28/09/2029<br>केतु 05/12/2029 | सूर्य 22/12/2029<br>चंद्र 20/01/2030<br>मंगल 09/02/2030<br>राहु 02/04/2030<br>गुरु 18/05/2030<br>शनि 12/07/2030<br>बुध 31/08/2030<br>केतु 20/09/2030<br>शुक्र 17/11/2030 | चंद्र 04/01/2031<br>मंगल 07/02/2031<br>राहु 04/05/2031<br>गुरु 20/07/2031<br>शनि 20/10/2031<br>बुध 10/01/2032<br>केतु 13/02/2032<br>शुक्र 19/05/2032<br>सूर्य 17/06/2032 | मंगल 11/07/2032<br>राहु 09/09/2032<br>गुरु 02/11/2032<br>शनि 05/01/2033<br>बुध 04/03/2033<br>केतु 27/03/2033<br>शुक्र 03/06/2033<br>सूर्य 23/06/2033<br>चंद्र 27/07/2033 |
| शनि - राहु<br>27/07/2033<br>02/06/2036                                                                                                                                   | शनि - गुरु<br>02/06/2036<br>14/12/2038                                                                                                                                   | बुध - बुध<br>14/12/2038<br>12/05/2041                                                                                                                                    | बुध - केतु<br>12/05/2041<br>09/05/2042                                                                                                                                   | बुध - शुक्र<br>09/05/2042<br>09/03/2045                                                                                                                                  |
| राहु 30/12/2033<br>गुरु 18/05/2034<br>शनि 29/10/2034<br>बुध 26/03/2035<br>केतु 26/05/2035<br>शुक्र 15/11/2035<br>सूर्य 06/01/2036<br>चंद्र 02/04/2036<br>मंगल 02/06/2036 | गुरु 03/10/2036<br>शनि 27/02/2037<br>बुध 08/07/2037<br>केतु 31/08/2037<br>शुक्र 01/02/2038<br>सूर्य 19/03/2038<br>चंद्र 04/06/2038<br>मंगल 28/07/2038<br>राहु 14/12/2038 | बुध 18/04/2039<br>केतु 08/06/2039<br>शुक्र 02/11/2039<br>सूर्य 16/12/2039<br>चंद्र 27/02/2040<br>मंगल 18/04/2040<br>राहु 28/08/2040<br>गुरु 23/12/2040<br>शनि 12/05/2041 | केतु 02/06/2041<br>शुक्र 01/08/2041<br>सूर्य 19/08/2041<br>चंद्र 18/09/2041<br>मंगल 10/10/2041<br>राहु 03/12/2041<br>गुरु 20/01/2042<br>शनि 19/03/2042<br>बुध 09/05/2042 | शुक्र 28/10/2042<br>सूर्य 19/12/2042<br>चंद्र 15/03/2043<br>मंगल 15/05/2043<br>राहु 17/10/2043<br>गुरु 03/03/2044<br>शनि 14/08/2044<br>बुध 07/01/2045<br>केतु 09/03/2045 |
| बुध - सूर्य<br>09/03/2045<br>13/01/2046                                                                                                                                  | बुध - चंद्र<br>13/01/2046<br>15/06/2047                                                                                                                                  | बुध - मंगल<br>15/06/2047<br>11/06/2048                                                                                                                                   | बुध - राहु<br>11/06/2048<br>29/12/2050                                                                                                                                   | बुध - गुरु<br>29/12/2050<br>05/04/2053                                                                                                                                   |
| सूर्य 24/03/2045<br>चंद्र 19/04/2045<br>मंगल 07/05/2045<br>राहु 23/06/2045<br>गुरु 03/08/2045<br>शनि 21/09/2045<br>बुध 04/11/2045<br>केतु 22/11/2045<br>शुक्र 13/01/2046 | चंद्र 25/02/2046<br>मंगल 27/03/2046<br>राहु 13/06/2046<br>गुरु 21/08/2046<br>शनि 11/11/2046<br>बुध 23/01/2047<br>केतु 23/02/2047<br>शुक्र 20/05/2047<br>सूर्य 15/06/2047 | मंगल 06/07/2047<br>राहु 29/08/2047<br>गुरु 16/10/2047<br>शनि 13/12/2047<br>बुध 02/02/2048<br>केतु 23/02/2048<br>शुक्र 24/04/2048<br>सूर्य 12/05/2048<br>चंद्र 11/06/2048 | राहु 29/10/2048<br>गुरु 02/03/2049<br>शनि 27/07/2049<br>बुध 06/12/2049<br>केतु 29/01/2050<br>शुक्र 04/07/2050<br>सूर्य 19/08/2050<br>चंद्र 05/11/2050<br>मंगल 29/12/2050 | गुरु 19/04/2051<br>शनि 28/08/2051<br>बुध 23/12/2051<br>केतु 09/02/2052<br>शुक्र 26/06/2052<br>सूर्य 07/08/2052<br>चंद्र 15/10/2052<br>मंगल 02/12/2052<br>राहु 05/04/2053 |



## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

|                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                          |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <b>बुध - शनि</b><br><b>05/04/2053</b><br><b>14/12/2055</b>                                                                                                               | <b>केतु - केतु</b><br><b>14/12/2055</b><br><b>11/05/2056</b>                                                                                                             | <b>केतु - शुक्र</b><br><b>11/05/2056</b><br><b>12/07/2057</b>                                                                                                            | <b>केतु - सूर्य</b><br><b>12/07/2057</b><br><b>16/11/2057</b>                                                                                                            | <b>केतु - चंद्र</b><br><b>16/11/2057</b><br><b>17/06/2058</b>                                                                                                            |
| शनि 08/09/2053<br>बुध 25/01/2054<br>केतु 23/03/2054<br>शुक्र 03/09/2054<br>सूर्य 22/10/2054<br>चंद्र 12/01/2055<br>मंगल 11/03/2055<br>राहु 05/08/2055<br>गुरु 14/12/2055 | केतु 23/12/2055<br>शुक्र 17/01/2056<br>सूर्य 24/01/2056<br>चंद्र 06/02/2056<br>मंगल 14/02/2056<br>राहु 08/03/2056<br>गुरु 28/03/2056<br>शनि 20/04/2056<br>बुध 11/05/2056 | शुक्र 21/07/2056<br>सूर्य 12/08/2056<br>चंद्र 16/09/2056<br>मंगल 11/10/2056<br>राहु 14/12/2056<br>गुरु 09/02/2057<br>शनि 17/04/2057<br>बुध 17/06/2057<br>केतु 12/07/2057 | सूर्य 18/07/2057<br>चंद्र 29/07/2057<br>मंगल 05/08/2057<br>राहु 24/08/2057<br>गुरु 10/09/2057<br>शनि 30/09/2057<br>बुध 19/10/2057<br>केतु 26/10/2057<br>शुक्र 16/11/2057 | चंद्र 04/12/2057<br>मंगल 17/12/2057<br>राहु 17/01/2058<br>गुरु 15/02/2058<br>शनि 21/03/2058<br>बुध 20/04/2058<br>केतु 02/05/2058<br>शुक्र 07/06/2058<br>सूर्य 17/06/2058 |
| <b>केतु - मंगल</b><br><b>17/06/2058</b><br><b>14/11/2058</b>                                                                                                             | <b>केतु - राहु</b><br><b>14/11/2058</b><br><b>02/12/2059</b>                                                                                                             | <b>केतु - गुरु</b><br><b>02/12/2059</b><br><b>07/11/2060</b>                                                                                                             | <b>केतु - शनि</b><br><b>07/11/2060</b><br><b>17/12/2061</b>                                                                                                              | <b>केतु - बुध</b><br><b>17/12/2061</b><br><b>14/12/2062</b>                                                                                                              |
| मंगल 26/06/2058<br>राहु 18/07/2058<br>गुरु 07/08/2058<br>शनि 31/08/2058<br>बुध 21/09/2058<br>केतु 30/09/2058<br>शुक्र 25/10/2058<br>सूर्य 01/11/2058<br>चंद्र 14/11/2058 | राहु 10/01/2059<br>गुरु 02/03/2059<br>शनि 02/05/2059<br>बुध 25/06/2059<br>केतु 18/07/2059<br>शुक्र 20/09/2059<br>सूर्य 09/10/2059<br>चंद्र 10/11/2059<br>मंगल 02/12/2059 | गुरु 17/01/2060<br>शनि 10/03/2060<br>बुध 28/04/2060<br>केतु 18/05/2060<br>शुक्र 13/07/2060<br>सूर्य 31/07/2060<br>चंद्र 28/08/2060<br>मंगल 17/09/2060<br>राहु 07/11/2060 | शनि 10/01/2061<br>बुध 08/03/2061<br>केतु 01/04/2061<br>शुक्र 07/06/2061<br>सूर्य 28/06/2061<br>चंद्र 31/07/2061<br>मंगल 24/08/2061<br>राहु 24/10/2061<br>गुरु 17/12/2061 | बुध 06/02/2062<br>केतु 27/02/2062<br>शुक्र 29/04/2062<br>सूर्य 17/05/2062<br>चंद्र 16/06/2062<br>मंगल 07/07/2062<br>राहु 30/08/2062<br>गुरु 18/10/2062<br>शनि 14/12/2062 |
| <b>शुक्र - शुक्र</b><br><b>14/12/2062</b><br><b>14/04/2066</b>                                                                                                           | <b>शुक्र - सूर्य</b><br><b>14/04/2066</b><br><b>15/04/2067</b>                                                                                                           | <b>शुक्र - चंद्र</b><br><b>15/04/2067</b><br><b>13/12/2068</b>                                                                                                           | <b>शुक्र - मंगल</b><br><b>13/12/2068</b><br><b>13/02/2070</b>                                                                                                            | <b>शुक्र - राहु</b><br><b>13/02/2070</b><br><b>12/02/2073</b>                                                                                                            |
| शुक्र 05/07/2063<br>सूर्य 04/09/2063<br>चंद्र 14/12/2063<br>मंगल 23/02/2064<br>राहु 24/08/2064<br>गुरु 02/02/2065<br>शनि 14/08/2065<br>बुध 02/02/2066<br>केतु 14/04/2066 | सूर्य 03/05/2066<br>चंद्र 02/06/2066<br>मंगल 23/06/2066<br>राहु 17/08/2066<br>गुरु 05/10/2066<br>शनि 02/12/2066<br>बुध 23/01/2067<br>केतु 13/02/2067<br>शुक्र 15/04/2067 | चंद्र 04/06/2067<br>मंगल 10/07/2067<br>राहु 09/10/2067<br>गुरु 29/12/2067<br>शनि 04/04/2068<br>बुध 29/06/2068<br>केतु 04/08/2068<br>शुक्र 13/11/2068<br>सूर्य 13/12/2068 | मंगल 07/01/2069<br>राहु 12/03/2069<br>गुरु 08/05/2069<br>शनि 15/07/2069<br>बुध 13/09/2069<br>केतु 08/10/2069<br>शुक्र 18/12/2069<br>सूर्य 08/01/2070<br>चंद्र 13/02/2070 | राहु 27/07/2070<br>गुरु 20/12/2070<br>शनि 12/06/2071<br>बुध 14/11/2071<br>केतु 17/01/2072<br>शुक्र 17/07/2072<br>सूर्य 10/09/2072<br>चंद्र 10/12/2072<br>मंगल 12/02/2073 |

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

|              |                          |
|--------------|--------------------------|
| मूलांक       | 6                        |
| भाग्यांक     | 2                        |
| मित्र अंक    | 3, 4, 6, 9, 2            |
| शत्रु अंक    | 1, 7, 8                  |
| शुभ वर्ष     | 24,33,42,51,60           |
| शुभ दिन      | शुक्र, शनि, बुध          |
| शुभ ग्रह     | शुक्र, शनि, बुध          |
| मित्र राशि   | मकर, मिथुन               |
| मित्र लग्न   | मेष, कन्या, वृश्चिक      |
| अनुकूल देवता | लक्ष्मी                  |
| शुभ रत्न     | नीलम                     |
| शुभ उपरत्न   | जमुनिया, बिलौर           |
| भाग्य रत्न   | पन्ना                    |
| शुभ धातु     | लौह                      |
| शुभ रंग      | काला                     |
| शुभ दिशा     | पश्चिम                   |
| शुभ समय      | संध्या                   |
| दान पदार्थ   | कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह |
| दान अन्न     | उड़द                     |
| दान द्रव्य   | तेल                      |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions

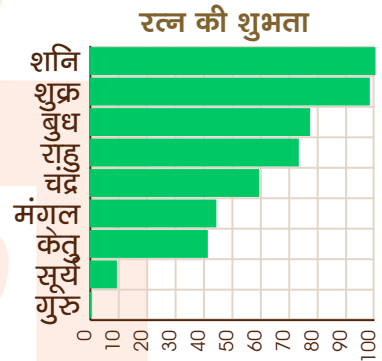


## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न     | ग्रह  | शुभता | क्षेत्र                                         |
|----------|-------|-------|-------------------------------------------------|
| नीलम     | शनि   | 100%  | व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, धन                |
| हीरा     | शुक्र | 98%   | धनार्जन, सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति          |
| पन्ना    | बुध   | 77%   | व्यावसायिक उन्नति, शत्रु व रोग मुक्ति, भाग्योदय |
| गोमेद    | राहु  | 73%   | सन्तति सुख, धनार्जन                             |
| मोती     | चंद्र | 59%   | व्यावसायिक उन्नति, दम्पति                       |
| मूंगा    | मंगल  | 44%   | व्यय, ग्रह कलेश, हानि                           |
| लहसुनिया | केतु  | 41%   | हानि, व्यय                                      |
| माणिक्य  | सूर्य | 9%    | व्यावसायिक हानि, दुर्घटना                       |
| पुखराज   | गुरु  | 0%    | व्यय, पराक्रम हानि                              |



### दशानुसार रत्न विचार

| दशा   | समाप्ति    | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| मंगल  | 14/12/1985 | 22%     | 66%  | 59%   | 64%   | 0%     | 98%  | 100% | 61%   | 52%      |
| राहु  | 14/12/2003 | 0%      | 44%  | 19%   | 77%   | 0%     | 100% | 100% | 86%   | 16%      |
| गुरु  | 14/12/2019 | 22%     | 66%  | 53%   | 64%   | 6%     | 86%  | 100% | 73%   | 41%      |
| शनि   | 14/12/2038 | 0%      | 44%  | 19%   | 83%   | 0%     | 100% | 100% | 80%   | 16%      |
| बुध   | 14/12/2055 | 22%     | 44%  | 44%   | 89%   | 0%     | 100% | 100% | 73%   | 41%      |
| केतु  | 14/12/2062 | 0%      | 44%  | 53%   | 77%   | 0%     | 100% | 91%  | 61%   | 58%      |
| शुक्र | 14/12/2082 | 0%      | 44%  | 44%   | 83%   | 0%     | 100% | 100% | 80%   | 52%      |
| सूर्य | 13/12/2088 | 34%     | 66%  | 53%   | 77%   | 0%     | 86%  | 91%  | 61%   | 16%      |
| चंद्र | 14/12/2098 | 22%     | 72%  | 44%   | 83%   | 0%     | 98%  | 100% | 61%   | 16%      |



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions





## विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।  
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

### आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

नीलम आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

हीरा आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए गोमेद एवं मोती रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम हैं। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा व लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

माणिक्य व पुखराज रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा

उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

### नीलम

आपकी कुंडली में शनि दशम भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न शुभता से आप सदा प्रसन्न रहने वाले, पुण्यकर्म करने वाले, लोगों के प्रेम-पात्र और माननीय बनेंगे। रत्न शुभता से आप नीतिज्ञ, नम्र स्वभाव वाले और महत्वाकांक्षी व्यक्ति हैं। यह रत्न आपको परिश्रमी और चतुर भी बनाएगा। नीलम रत्न आपकी नेतृत्व शक्ति को बढ़ाएगा। पराक्रम भाव की वृद्धि करेगा। आपको कार्यक्षेत्र में धीरे-धीरे प्रगति प्राप्त होगी। लड़ाई-झगड़े और युद्ध में विजयी होंगे। नीलम रत्न जीवन में उच्च पद देगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में शनि लग्नेश एवं द्वितीयेश है। शनि रत्न नीलम धारण कर आप शनि के सभी शुभफल प्राप्त कर सकते हैं। यह नीलम रत्न आपको स्वभाव, शरीर आरोग्यता, आयु, यश एवं प्रतिष्ठा दे सकता है। इस रत्न को धारण करने से आपके संचित धन में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से स्वास्थ्य शुभ, व्यक्तित्व उज्ज्वल, अचल संपत्ति, कुटुंब, उत्तम भोजन, पारिवारिक सुख, वाणी की मधुरता एवं आरम्भिक शिक्षा उत्तम हो सकती है। नीलम रत्न प्रभाव से आपके परिवार में बढ़ोतरी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात् शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्नी, अन्यथा 5-6 रत्नी का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

### हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाक्चातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।



आपकी मकर लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं दशमेश है। आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपको माता-पिता से सुख, शारीरिक सौंदर्य की वृद्धि, भू-संपत्ति का सुख दिला सकता है। इस रत्न को धारण कर आप वाहन, राज्य व आजीविका क्षेत्र से शुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। लाभ व प्रतिष्ठा प्राप्ति के लिए भी आप यह हीरा रत्न धारण कर सकते हैं। यह रत्न पंचमेश का होने के कारण आपको विद्या, बुद्धि एवं संतान सुख को अनुकूल करने में सहयोग कर सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा १ रत्ती से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

### पन्ना

आपकी कुंडली में बुध दशम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपकी न्यायप्रियता और नीतिनिपुणता में वृद्धि करेगा। रत्न शुभता आपको विवेकवान। गुणवान और सत्यवादी व्यक्ति बनेंगे। यह रत्न आपके धैर्य और विनम्रता को बढ़ाएगा। परिस्थिति अनुसार बोलने का कौशल यह रत्न पन्ना आपको दे सकता है। रत्न प्रभाव आपको यशस्वी और व्यवहार कुशल बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आपको विभिन्न प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होगा। रत्न शुभता आपको धनाढ्य और संपत्तिवान बनाएगी। व्यापार के माध्यम से लाभ, सफलता दोनों देगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में बुध नवमेश व षष्ठेश है। बुध रत्न पन्ना आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण कर आप अपने भाग्य को प्रगतिशील बना सकते हैं। धर्म, कर्म और आध्यात्मिक विषयों से सहज जुड़ सकते हैं। पन्ना रत्न धारण से आप शत्रुओं को बुद्धिमानों से परास्त कर पायेंगे। यह रत्न आपको यथायोग्य सम्मान दिलाएगा। रत्न शुभता से आपके बाधित कार्य फिर से बनने लगेंगे। पन्ना रत्न की शुभता से आप अपने ऋणों का समय पर भुगतान करने में सफल रहेंगे। दैनिक व्यवसाय की कठिनाईयां रत्न शुभता से दूर हो सकती है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

### गोमेद

आपकी कुंडली में राहु पंचम भाव में स्थित है। आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न आपको तीक्ष्णबुद्धिवान, विभिन्न शास्त्रों का ज्ञाता, दयालु और कर्मठ बनायेगा। इसकी शुभता से आपके भाग्य में शुभता आयेगी। व्यवसायिक कार्यों में आपको रत्न शुभता प्रदान कर सफलता देगा। रत्न प्रभाव से आपकी लेखनकला में कुशलता आयेगी। आर्थिक स्थिति प्रबल होगी। गोमेद रत्न आपको सदमार्ग पर चलने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव से धन संग्रह करना आपके लिए सहज होगा। गोमेद रत्न आपको चिकित्सा क्षेत्र में सफलता देगा।

राहु वृष राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र एकादश भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न आपको अनेक क्षेत्रों से आय प्राप्त के स्रोत देगा। यह रत्न आपको विवाद विजयी, विनोदी और स्वाभिमानी बनाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप वाहन आदि से सुखी होंगे। परदेश में यह आपका भाग्योदय करेगा। रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक महत्वकांक्षी हो सकते हैं। यह रत्न आपको व्यवसायी, सरकार से प्रतिष्ठा एवं व्यावसायिक लाभ प्राप्त करेंगे। रत्न शुभता आपको अन्न, वस्त्र, अलंकार, धन, पशु, वाहन आदि से सुखी करेगी। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आप धन-धान्य से युक्त होंगे। यह रत्न आपके अहंकार भाव को भी नियंत्रित रखेगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।



## मोती

आपकी कुंडली में चंद्र दशम भाव में स्थित है। आपके लिए चंद्र रत्न मोती धारण करना शुभ रहेगा। यह रत्न आपको समाज में प्रतिष्ठा देगा। यह रत्न आपको सफलता तो देगा ही साथ ही लोगों की बीच आपकी लोकप्रियता भी बढ़ायेगा। मोती रत्न कार्यकुशलता में निखार लायेगा। जीवन में बड़ी सफलता देगा। रत्न शुभता से आप दयालु, निर्मल, लोकहित कारक एवं संतोषी व्यक्ति बनेंगे। व्यापार और व्यवसाय में सफलता देगा। आपको उच्चमहत्वांक्षी बनाकर उच्च पद प्रदान करेगा।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में चंद्र सप्तम भाव के स्वामी है। चंद्र रत्न मोती धारण करना आपके लिए विशेष शुभ रहेगा। मोती रत्न धारण करने से आपका अपने जीवन साथी से विशेष स्नेह बना रहेगा। मोती की शुभता से दांपत्य जीवन स्नेह और सौहार्द भाव से परिपूर्ण हो सकता है। यह रत्न आपके स्वाभिमान भाव में बढ़ोतरी कर सकता है। मोती रत्न से आपको क्रय-विक्रय से संबन्धित क्षेत्रों में उत्तम लाभ देकर मनोकूल सफलता दे सकता है। रत्न शुभता से आप ग्रहस्थ जीवन में स्थिरता आयेगी। यह रत्न आपको विनोदी स्वभाव देकर आपको विपरीत परिस्थितियों का मुस्करा कर मुकाबला करने की शक्ति दे सकता है। ससुराल से लाभ, सम्मानित, व्यवसाय में लाभ व मानसिक शांति प्राप्ति के लिए भी मोती रत्न धारण किया जा सकता है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातः काल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ॐ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते हैं।

## मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर आपमें साहस एवं हिम्मत की कमी हो सकती है। इसके कारण जीवन में आने वाले विपरीत समय का आप साहस के साथ मुकाबला नहीं कर पाएंगे। मूंगा रत्न आपको झूठे दोषारोपण दे सकता है। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपको गुप्त चोटें भी लग सकती हैं। इस रत्न के प्रभाव से आपकी गुरु भक्ति भावना में कमी भी संभावित है। इस रत्न से आपका स्वयं पर विश्वास कुछ कम हो सकता है। आप स्वयं को असफल मान सकते हैं। वैवाहिक जीवन में सुख की कमी हो सकती है। मूंगा



रत्न धारण पर आपके जीवन की उन्नति प्रतियोगियों के कारण प्रभावित हो सकती है। रत्न प्रभाव से आपके रोग, ऋण और विरोधी अधिक प्रभावी हो सकते हैं।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में मंगल चतुर्थेश एवं एकादशेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर भूमि-भवन के विषय सहजता से पूर्ण नहीं होंगे। मूंगा रत्न आपको संपत्ति के क्रय-विक्रय से संबंधित कार्यक्षेत्रों में हानि दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपको जन्मस्थान से दूर रहना पड़ सकता है। यह रत्न आपकी माता, वाहन एवं समाज का सुख मार्ग बाधित कर सकता है। इस रत्न को धारण करने के बाद आप अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। उच्चाभिलाषा की कामना आपको आंशिक रूप से स्वाधी भी बना सकती है। मूंगा रत्न आपको जोश, साहस और जोखिम पूर्ण क्षेत्रों में आय व लाभार्जन की प्रवृत्ति आपको दे सकता है।

### लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने से आपके पेट की बीमारियां बढ़ सकती हैं। आपके द्वारा स्वयं की हानि हो सकती है। शत्रु आपकी परेशानियां बढ़ा सकते हैं। सरकार या राजा द्वारा सम्मान प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। प्रशंसा की कमी का अनुभव आपको हो सकता है। यह रत्न आपके पराक्रम, प्रतिष्ठा और लोकप्रियता में प्रतिकूलता ला सकता है। आभूषण और ऐश्वर्य के लिए भी रत्न का सुख सहयोग आपको प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आप के अधिकतर कार्य अधूरे रह सकते हैं। आपकी चिंताओं में बढ़ोतरी होगी। तथा संतान से संबंधों की मधुरता कम हो सकती है। बड़े भाई-बहनों से संबंधों की प्रगाढ़ता भी प्रभावित हो सकती है।

केतु वृश्चिक राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती हैं। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

### माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य दशम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपकी माता को कष्ट हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके मस्तिष्क में नकारात्मक विचार आ सकते हैं। आजीविका क्षेत्र में अधिकारों और शक्तियों की कमी आपको हो सकती है। आपमें अत्यधिक अहं भाव के कारण कार्यक्षेत्र में आपसे आपके अधीनस्थ नाराज रह सकते हैं। आपको पिता की कठोरता का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव आपके पिता से संबंध प्रभावित

कर सकता है। उच्चाधिकारियों की सराहना प्राप्त करने के लिए आपको विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। सरकारी पद, टेंडर प्राप्ति इत्यादि में आपको कष्टों का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी मकर लग्न की कुंडली में सूर्य अष्टमेश है। अष्टमेश सूर्य का माणिक्य रत्न धारण करना आपके लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आपके स्वास्थ्य सुख में कमी हो सकती है। इस रत्न में शुभता की कमी के कारण आप पदोन्नति के लिए विशेष चातुर्य का प्रयोग करने का प्रयास कर सकते हैं। सरकारी क्षेत्रों से अपना काम निकलवाने के लिए भी आप अन्य स्रोतों का सहयोग लेने से पीछे नहीं हटेंगे। रत्न प्रभाव से आप अपनी अधिकारिक शक्तियों का आंशिक दुरुपयोग कर सकते हैं। रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं है। इसलिए यह रत्न आपके पिता के स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकता है। यह रत्न आपको दीर्घकालीन रोग दे सकता है।

### पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः गुरु रत्न पुखराज धारण कर आपमें आशावादिता भाव की कमी आ सकती है। दूसरों के लिए आपमें सहानुभूति तो बहुत होगी परन्तु आप चाहकर भी किसी के काम नहीं आ पाएंगे। कई बार आप दुष्ट लोगों पर भी सहानुभूति रखेंगे। पुखराज रत्न आपको जीवन में हानि करा सकता है। आर्थिक स्थिति में बढ़ोतरी के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। आपको सम्मान की कमी का सामना करना पड़ सकता है। पुखराज रत्न आपकी प्रसन्नता, सुख एवं सौभाग्य में कमी करेगा। यह रत्न रोग, ऋण और शत्रु आपके प्रबल कर सकता है। आयु और मातृ सुख में कमी कर सकता है। विदेश स्थानों से आपको धन हानि हो सकती है।

आपकी मकर लग्न के कुंडली में गुरु तृतीयेश एवं द्वादशेश है। गुरु का रत्न पुखराज धारण करना आपके लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पुखराज रत्न पहनने पर अनिद्रा रोग प्रभावी होकर आपके स्वास्थ्य में कमी कर सकते हैं। कार्यों को पूर्ण करने के लिए आपको अधिक प्रयास करने पड़ सकते हैं। जिसके कारण आपको आराम के अवसर कम मिलेंगे। यह भी आपको अस्वस्थ करेगा। इस रत्न के प्रभाव से आप चिंता और अपमान से पीड़ित हो सकते हैं। मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को यह रत्न बाधित कर सकता है। पुखराज रत्न आपके विदेश भाव को प्रबल कर आपको व्यर्थ की यात्राएं दे सकता है। इसके अतिरिक्त इस रत्न को धारण करने पर आपको आर्थिक दंड के रूप में टैक्स (कर) देने पड़ सकते हैं।

### दशानुसार रत्न विचार

#### शनि

(14/12/2019 - 14/12/2038)

शनि की दशा में आपका हीरा, नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती रत्न नेष्ट हैं और मूंगा, लहसुनिया, माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं।

नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**बुध**  
**(14/12/2038 - 14/12/2055)**

बुध की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, मूंगा व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**केतु**  
**(14/12/2055 - 14/12/2062)**

केतु की दशा में आपका हीरा, नीलम व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, लहसुनिया व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**शुक्र**  
**(14/12/2062 - 14/12/2082)**

शुक्र की दशा में आपका हीरा, नीलम, पन्ना व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती व मूंगा रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



**सूर्य**  
**(14/12/2082 - 13/12/2088)**

सूर्य की दशा में आपका नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

**चन्द्र**  
**(13/12/2088 - 14/12/2098)**

चन्द्र की दशा में आपका नीलम, हीरा व पन्ना रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, लहसुनिया व पुखराज रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

## शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - लापीज

आपका जन्म मकर राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी शनि होता है। शनि सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह ज्योतिष शास्त्र में न्याय का प्रतीक व न्यायप्रिय माना जाता है तथा शनि को ज्योतिष में आध्यात्मिक ज्ञान के लिये शुभ माना जाता है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मकर राशि के लग्न वाले जातकों को मकर राशि के स्वामी ग्रह शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। शनि ग्रह के लिये लापीज रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी शनि न्यायप्रिय एवं नौकरी का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को समाज में सम्मान तथा नौकरी पेशा लोगों के लिये अपने वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग व सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को घर के बुजुर्गों तथा सेवकों का सहयोग भी प्राप्त होता है। शनि ग्रह एकाग्रता तथा आत्मिक शक्ति का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको जोड़ों से संबंधित रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जिसको कोर्ट कचहरी मुकदमे आदि से संबंधित परेशानी हों उनको यह रत्न अल्प प्रयास से समस्याओं से मुक्ति दिलवाता है।

लापीज रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है। लापीज रत्न शनि का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल सूर्यास्त के पश्चात होता है। शनिवार के दिन सूर्यास्त से एक घंटे के समय के अंदर इसको धारण करना होता है। लापीज को यदि शनिवार के साथ-साथ शनि के नक्षत्र अर्थात् पुष्य, अनुराधा और उ. भाद्रपद में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

लापीज को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, शनि के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

शनि का मंत्र - ॐ शं शनैश्चराय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि शनि से संबंधित पदार्थ जैसे काली उड़द, सरसों का तेल, सवा मीटर काले कपड़े का दान करें तो लापीज रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन शनि का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और शनि देव की उपासना करें तो यह लापीज रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक शनिवार को शनिदेव जी की उपासना करें तथा शनिदेव जी का सरसों के तेल से अभिषेक करें तो यह और अधिक शुभकारी हो जाता है।

मकर लग्न वाले जातक यदि लापीज रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions





## रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

### आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मकर लग्न की है। आपके व्यक्तित्व पर शनि का प्रभाव दिखाई पड़ता है। आप मेहनती हैं, इसलिए बिना रुके निरन्तर कार्य करते रहते हैं, जिस कारण इनके किये हुए कार्यों में गलतियों की संभावना कम रहती है। आप दृढ़ निश्चयी और संयमी हैं। जीवन से आने वाली बाधाओं से घबराते नहीं हैं, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करते हैं। दूसरों की मदद करने की प्रवृत्ति रखते हैं। साथ ही आप हंसमुख हैं। आप में व्यय अधिक करने का स्वभाव हो सकता है। दूसरों की मदद करने वाले होते हैं। आप हँसमुख हैं। आप कम समय में किसी भी परिस्थिति में अपने का ढालने में दक्ष होते हैं।

आप गलत बातें सहन नहीं कर पाते चाहे उस विरोध में अकेले ही रह जाये। आप



अपनी समझदारी और सूझ-बूझ का परिचय देते हुए बड़ी ही आसानी से अपना कार्य करवा लेते हैं। हर विषय में आपकी रुचि रहती है और हर क्षेत्र में सफलता पाना चाहे हैं और अपनी मेहनत और लगन से सफलता हासिल कर भी लेते हैं। आप न्याय है और कभी किसी के साथ धोखा नहीं करते। असफलता मिलने पर आप शीघ्र निराश हो जाते हैं। व्यर्थ की बातें करने में अपना वक्त व्यय नहीं करते और अपने भविष्यके बारे में सोचते हैं। आप परोपकारी है और अनुशासन पसंद हैं। अपने सिद्धांतों पर जीते हैं। आप परोपकारी हैं।

कुंडली के सभी 12 भाव सदैव शुभ फल नहीं देते। 12 भावों में से 6, 8 व 12 वां भाव जिन्हें त्रिक भाव के नाम से भी जाना जाता है। इन भावों के भावेश तथा इन भावों में स्थित ग्रह अशुभ होने के कारण अशुभ फल देते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। कुंडली के षष्ठ भाव को रोग, ऋण और शत्रु भाव की संज्ञा की जाती है। छोटी अवधि के रोग भी इसी भाव से देखे जाते हैं। तथा अष्टम भाव मृत्यु, दुर्घटना, कलेश, विघ्न और अकाल मृत्यु और परेशानियों का विचार किया जाता है। अष्टमेश का किसी भी भाव-भावेश से सम्बन्ध बनना अनुकूल नहीं माना जाता है। 6 व 8 भावों के बाद एक अन्य व अंतिम त्रिक भाव 12 वां भाव है। 12 वें भाव से व्यय, सरकारी दंड, लम्बी अवधि का कारावास, शयन, मोक्ष, टैक्स तथा विदेश स्थान का विचार किया जाता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता है। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते हैं।

बुध आपके षष्ठेश व नवमेश है, आपका पारिवारिक जीवन कष्टकारी हो सकता है। व्यापारिक विषयों में भी हानि के योग बन सकते हैं। इसके अलावा यह आपको शत्रुओं के द्वारा धन-हानि की संभावनाएं दे सकता है। यह योग पिता के स्वास्थ्य के पक्ष से भी शुभ नहीं है। सूर्य अष्टमेश गुरु द्वादशेश तथा तृतीयेश हैं।

मंगल द्वादश भाव में है। पुरुषार्थ से किये गए सभी कार्य आपके सफल हो सकते हैं। आपका स्वभाव कठोर, शंकालु, असत्यभाषी, अल्प धर्मपरायण, शत्रुहन्ता, मामा को कष्ट, बाहर के लोगों द्वारा धन-नाश, वात- पित रोगी, और संतान जन्य चिंता दे सकता है।

गुरु अष्टम भाव में आपमें स्वार्थ भाव की वृद्धि कर रहा है, यह योग मामा को कष्ट दे सकता है, सट्टा-जुआ की लत से दूर रहे, ऋण ग्रस्तता, शत्रुओं से पीड़ित, संपत्ति का नाश और माता-पिता से मांसिक मतभेद करा सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 3, 4, 5 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions





लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।



## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

|                        |                                                                   |       |
|------------------------|-------------------------------------------------------------------|-------|
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 24/10/1984-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985                       | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 21/12/1984-01/06/1985 17/09/1985-17/12/1987                       | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 21/03/1990-20/06/1990 15/12/1990-05/03/1993 15/10/1993-10/11/1993 | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 07/06/2000-23/07/2002 08/01/2003-07/04/2003                       | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 10/09/2009-15/11/2011 16/05/2012-04/08/2012                       | ----- |

### द्वितीय चक्र:

|                        |                                                                   |       |
|------------------------|-------------------------------------------------------------------|-------|
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014                       | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017                       | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 24/01/2020-29/04/2022 12/07/2022-17/01/2023                       | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032                       | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041 | ----- |

### तृतीय चक्र:

|                        |                                                                   |       |
|------------------------|-------------------------------------------------------------------|-------|
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046                       | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052                       | ----- |
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062                       | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 30/08/2068-04/11/2070                                             | ----- |

### शनि का ढैया फल

#### ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया  
साढ़ेसाती तृतीय ढैया  
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया  
अष्टम स्थानस्थ ढैया  
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

#### फल

शुभ  
सम  
शुभ  
शुभ  
शुभ

#### क्षेत्र

व्यावसायिक उन्नति  
अल्प बचत  
स्वास्थ्य  
सन्तति सुख  
भाग्योदय



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।



## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति जन्म कुंडली में द्वादश भाव में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं। परन्तु शास्त्रानुसार आपका मंगली दोष भंग हो रहा है। यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा स्वभाव व्ययशील होगा परन्तु अशुभ कार्यों की अपेक्षा शुभ कार्यों पर ही आप अधिकांश व्यय करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सांसारिक भोग्य पदार्थों का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आनन्द पूर्वक आप दाम्पत्य जीवन को व्यतीत करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक है। इसके प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यन्त ही शान्त एवं सुखद रूप से सम्पन्न होगा। इसमें किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। साथ ही विवाह के पश्चात भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रेम पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में समस्त आवश्यक सुख संसाधनों तथा अन्य भौतिक सामग्री से सुसम्पन्न रहेंगे। आपका शत्रु पक्ष भी हमेशा कमजोर रहेगा अतः इनसे आपको किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी।

आपकी जन्म कुण्डली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर व्यय करने में सर्वदा रुचिशील रहेंगे तथा समस्त भोग्य पदार्थों को अर्जित तथा उपभोग करने में सफल रहेंगे। इसकी तृतीय भाव पर दृष्टि से आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होगी तथा आप निर्भय होकर अपने समस्त कार्यों को सम्पन्न करेंगे। लोगों में अपना प्रभाव स्थापित करने में भी समर्थ रहेंगे। साथ ही भाई बहनों से भी आप युक्त रहेंगे। जीवन में उनसे वांछित सुख एवं सहयोग भी प्राप्त कर सकेंगे। षष्ठ भाव पर दृष्टि होने से शत्रु पक्ष प्रायः

निर्बल रहेगा। आपका विरोध करने में वे सर्वदा असमर्थ रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए शुभ ही रहेगी। इससे आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भी समावेश होगा। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण समर्पण की भावना रहेगी तथा आपके परस्पर संबंध भी घनिष्ठ एवं प्रेम पूर्वक रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त ही आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा एवं अनावश्यक व्यवधान तथा समस्याओं का प्रायः अभाव रहेगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो जीवन में सर्व सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर समाज में पूर्ण यश प्राप्त करने में सफल रहेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुण्डली मिलान के समय यदि कन्या के द्वादश भाव में मंगल हो तो आवश्यक होने पर ही विवाह करें क्योंकि समान भावों में मंगल होने से जीवन में यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होती रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन में तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। अन्य भावों में स्थित मंगल होने से दोष समाप्त हो जायेगा एवं जीवन सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा। अतः अन्तिम निर्णय अत्यन्त ही सूझ बूझ से लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार की समस्याएं उत्पन्न न हो सकें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- पंचम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में बुध और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में बुध पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला सदस्य द्वारा बच्चों पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप बहन, बुआ तथा मौसी की सेवा करके आशीर्वाद लें तथा तोते को हरी मिर्च खिलाकर पिंजड़े से मुक्त कर दें ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions





वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## ग्रह फल

### सूर्य

दशमभाव में सूर्य हो तो जातक-प्रतापी, व्यवसाय कुशल, राजमान्य लब्ध-प्रतिष्ठ, राजमन्त्री, उदार, ऐश्वर्य सम्पन्न एवं लोकमान्य होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

### चन्द्र

दसवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक कार्यकुशल, व्यापारी, कार्यपरायण, सुखी, यशस्वी, विद्वान्, कुल-दीपक, दयालु, निर्बल बुद्धि, सन्तोषी लोकहितैषी, मानी, प्रसन्नचित्त एवं दीर्घायु होता है।

तुला राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दीर्घदेही, आस्तिक, अन्नदाता, धनवान्, जमींदार, कुशाबुद्धिवाला, चतुर, उच्चाकांक्षाओं से रहित, सन्तोषी एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

## मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, क्रूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उनसे पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

## बुध

दशमभाव में बुध हो तो जातक सत्यवादी, मनस्वी, व्यवहार कुशल, लोकमान्य, विद्वान, लेखक, कवि जमींदार, मातृ-पितृ भक्त, राजमान्य, न्यायी एवं भाग्यवान् होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

## गुरु

द्वादश भाव में गुरु हो तो जातक मितभाषी, योगाभ्यासी, परोपकारी, उदार, आलसी, सुखी, मितव्ययी, शास्त्रज्ञ, सम्पादक, लोभी, यात्री एवं दुष्ट चित्तवाला होता है।

धनु राशि में गुरु हो तो जातक धनी, प्रभावशाली, विद्वान्, विश्वस्त, सज्जन, दानशील संगठनकर्त्ता, अच्छा वक्ता, धर्माचार्य, दम्भी, रतिप्रेमी एवं धूर्त होता है।

## शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

वृश्चिक राशि में शुक्र हो तो जातक-नास्तिक, कुकर्मि, स्त्रीद्वेषी दरिद्री, गुह्य रोगी,



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions





ऋणी, क्रोधी, स्वतन्त्र एवं अन्यायी होता है।

### शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

तुला राशि में शनि हो तो जातक राजनीति में रुचि रखने वाला, प्रसिद्धनेता, धनी, सम्मानित शक्तिशाली, दानशील, परस्त्रियों में रुचि, सुभाषी, यशस्वी, स्वाभिमानी एवं उन्नतिशील होता है।

### राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

### केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

## स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक शांत एवं उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति इनके मन में प्रेम तथा स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये विचारशीलता एवं गंभीरता के भाव से युक्त रहते हैं तथा अत्यंत ही परिश्रमी एवं कार्यशील होते हैं फलतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम पूर्वक सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता अद्वितीय होती है तथा यही गुण जीवन में इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा परायणता का भाव भी रहता है तथा देश एवं समाज सेवा के कार्यों में प्रवृत्त रहते हैं। ये साहसी एवं निर्भीक होते हैं तथापि मन में यदा कदा उदासीनता की भावना विद्यमान रहती है जिससे सुख में खुशी तथा दुःख में कष्ट की अनुभूति कम होती है। भौतिकता के प्रति इनका आकर्षण कम ही रहता है तथा सादा एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के ये इच्छुक रहते हैं। इसके अतिरिक्त स्वपरिश्रम के द्वारा ये अनुसन्धान, विज्ञान एवं शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में समाज में आदरणीय रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप एक स्वस्थ एवं बलवान व्यक्ति होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव भी होगा तथा अपने आदर्शों पर स्वतंत्र रूप से विचार करेंगे। साथ ही आपके उच्चादर्शों से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। दार्शनिकता के भाव से भी आप युक्त होंगे तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्द्वियों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव रहेगा फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः सदगुणों से सभी लोगों के मध्य आप आदरणीय रहेंगे।

लग्न में लग्नेश शनि की राशि के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में समर्थ होंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे फलतः आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमता की छाप रहेगी। कार्य क्षेत्र में भी आपका प्रभाव रहेगा तथा आपकी कर्तव्य परायणता तथा परिश्रम से उच्चाधिकारी वर्ग या सहयोगी सन्तुष्ट होंगे। फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपका दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा परस्पर सम्बन्धों में मधुरता रहेगी। उत्तम कार्यों को करने में भी आप रुचिशील होंगे फलतः समाज में एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में आपकी छवि रहेगी।

स्वव्यवसाय के प्रति आपकी इच्छा होगी तथा इसको सम्पन्न करके इसमें आपको इच्छित लाभ एवं उन्नति मिलेगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी उत्तम रहेगी जिससे धनैश्वर्य एवं वैभव से युक्त होंगे। साथ ही सुख संसाधनों से भी सुसम्पन्न रहेंगे तथा अपने कार्यों से समाज में प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करेंगे। इससे लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे परन्तु यदा कदा आप कृपणता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा होगी परन्तु धार्मिक कार्य कलाप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र एवं बन्धु वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे वांछित लाभ एवं सहयोग अवसरानुकूल प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार परिश्रमी एवं

पराक्रमी व्यक्ति होंगे तथा सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)



## धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुराईयों के प्रति हमेशा सजग रहेंगे। साथ ही आप एक स्पष्ट वक्ता होंगे तथा जो कुछ भी मन में हो स्पष्ट रूप से अन्य जनों के समक्ष कह देंगे। आपकी प्रवृत्ति निस्वार्थी रहेगी तथा इसी भाव से आपके सांसारिक कार्य कलाप सम्पन्न होंगे परन्तु अन्य जनों की बातों से आप शीघ्र ही सहमत हो जाएंगे इससे यदा कदा अनावश्यक परेशानियां भी हो सकती हैं। आप एक कर्तव्य परायण व्यक्ति होंगे तथा परिवार के प्रति आपका अत्यधिक लगाव रहेगा। साथ ही घर को भी आप हमेशा सुन्दर तथा आकर्षक रूप से देखना पंसद करेंगे।

आप परिवार के ओर से सर्वदा चिन्तित रहेंगे तथा मानसिक एवं भावनात्मक रूप से पारिवारिक सदस्यों से जुड़े रहेंगे। आप किसी भी चीज को शान्ति पूर्वक ग्रहण करेंगे तथा अनावश्यक चंचलता के भाव की आप में न्यूनता रहेगी। आपकी वाणी मधुर रहेगी तथा अन्य लोग वाणी से पूर्ण प्रभावित रहेंगे तथा आप स्पष्ट रूप से अपने विचारों को अभिव्यक्त करेंगे। आपको विभिन्न स्वादों का आस्वादन करना प्रिय लगेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा पारिवारिक जनों के साथ धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करते रहेंगे इसके अतिरिक्त किसी धनवान व्यक्ति के सहयोग से आप इच्छित धनार्जन करेंगे तथा सज्जनों एवं महात्माओं का आदर सत्कार करते रहेंगे। साथ ही अवसरानुकूल परोपकार संबंधी कार्यों को भी आप सम्पन्न करते रहेंगे।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्मसमय में चतुर्थ भाव में मेषराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। आप सांसारिक सुखों को अर्जित करने में समर्थ होंगे तथा आधुनिक सुख संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त होंगे। लेकिन सुखों को प्राप्त करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा यदा कदा इनमें विलम्ब भी होगा। लेकिन आप परिश्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति हैं। अतः इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा अपनी बुद्धिमता से आप सुख संसाधनों को अर्जित करने में तत्पर होंगे।

जीवन में आपको चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व भी प्राप्त होगा तथा किसी वृद्ध व्यक्ति की चल एवं अचल सम्पत्ति भी आपको मिल सकती है। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा समय समय पर धन स्वपराक्रम एवं परिश्रम से धन सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। लेकिन विवादित सम्पत्ति से आपको कोई भी संबंध स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त आपको चल की अपेक्षा अचल सम्पत्ति से विशेष लाभ के भी योग बनेंगे।

आपका आवास स्थान मध्यम होगा परंतु आवश्यक सुख-सुविधाओं से भी सुसज्जित होगा। घर को स्वच्छ एवं आकर्षक बनाए रखने के लिए आप व्यक्तिगत रूप से इच्छुक होंगे। आपका घर किसी मध्यम कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी सामान्य ही होंगे तथा संबंधों में औपचारिकता होगी। इसके अतिरिक्त वाहन सुख भी मध्यम होगा परंतु मध्यावस्था में इसमें अनुकूलता आएगी।

आपकी माता जी तेजस्वी, बुद्धिमान, शिक्षित एवं भौतिकतवादी विचारों की महिला होंगी तथा अपनी व्यवहार कुशलता से परिवार के सभी सदस्यों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। आपके प्रति उनके मन में विशिष्ट वात्सल्य का भाव होगा तथा समय समय पर उनसे आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे परंतु आपसी मतभेदों के कारण संबंधों में यदा कदा तनाव उत्पन्न हो सकता है।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा तथा छोटी कक्षाओं से आप स्वपरिश्रम से कुछ अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे परंतु स्नातक परीक्षा में आपको काफी परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा तभी वांछित सफलता मिल सकती है। यदि आप स्नातक परीक्षा की बजाय किसी तकनीकी पाठ्यक्रम का अध्ययन करें तो इसमें आपको अल्प परिश्रम से ही वांछित सफलता मिलेगी तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में वृद्धि होगी।

## प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में वृषराशि उदित हो रही थी। जिसका स्वामी शुक्र है तथा राहु भी पंचम भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से आप तीक्ष्ण बुद्धि के व्यक्ति होंगे तथा बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी तथा कठिन से कठिन समस्याओं को अपनी बुद्धिमता से समाधान करने में समर्थ होंगे इससे अन्य लोग भी आपकी बुद्धिमता से प्रभावित होंगे तथा आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वैदिक साहित्य, दर्शन एवं धर्म में आपकी अल्प रुचि होगी परन्तु आधुनिक विज्ञान, साहित्य तथा पाश्चात्य भाषाओं में विशेष रुचि होगी तथा इसमें आप परिश्रम पूर्वक ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे तथा इनका गहन ज्ञान अर्जित करके समाज में एक विद्वान एवं सम्मानित व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे।

पंचमभाव में राहु की स्थिति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी विशेष रुचि होगी तथा इन्हें स्थापित करने में आपको मानसिक संतुष्टि की प्राप्ति होगी। आपका परस्पर भावनात्मक आकर्षण भी विद्यमान होगा परन्तु आपको प्रेम के क्षेत्र में मर्यादा, नैतिकता तथा यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा सामाजिक सम्मान भी प्रभावित हो सकता है। अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

संतति भाव में राहु के प्रभाव से पुत्र संतति की प्राप्ति में आपको विलम्ब होगा परन्तु कन्या संतति अवश्य प्राप्त होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, परिश्रमी एवं पराक्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में उन्नति तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में मान सम्मान का भाव होगा तथा आज्ञापालन में भी तत्पर होंगे परन्तु उनकी प्रवृत्ति स्वच्छन्द होगी। अतः यदा-कदा वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को बिना माता-पिता की सलाह लिए भी सम्पन्न कर सकते हैं परन्तु इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से निर्णय लेने देने चाहिए। इससे आपसी सदभाव, विश्वास एवं मधुरता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में यद्यपि वे आपकी उपेक्षा नहीं करेंगे तथापि आपको यथोचित मात्रा में धन संचित करके रखना चाहिए जिससे अनावश्यक समस्याओं का सामना न करना पड़े।

अध्ययन के क्षेत्र में वे योग्य एवं बुद्धिमान सिद्ध होंगे तथा परिश्रम से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भी उनकी शिक्षा का यथोचित प्रबल करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में उन्हें शिक्षा प्रदान करेंगे। आपकी संतति व्यवहार कुशल सक्रिय एवं आकर्षक व्यक्तित्व की होगी जिससे सभी लोग उन्हें वांछित स्नेह एवं आदर प्रदान करेंगे तथा यथोचित प्रोत्साहन भी देंगे इससे आपकी सामाजिक मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इस प्रकार बच्चों की उन्नति से आप समान्यतया सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।



## परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है सामान्यतया कर्क राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील चंचल बुद्धिमान एवं धनाढ्य होता है। वह सौम्य तथा कर्तव्य परायणता के भाव से युक्त रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील एवं शांत स्वभाव की होंगी। उनके अधिकांश कार्य कलाप पराक्रम एवं बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। तथा अपने बुद्धिमता पूर्ण कार्यों से वे अन्य जनों को प्रभावित करेंगी उनकी प्रवृत्ति स्वाभिमानि होगी। परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी गौर वर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु अन्य अंग एवं प्रत्यंग पुष्ट रहेंगे जिससे सौन्दर्य दर्शनीय होगा एवं व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। भौतिकता के प्रति उनका लगाव होगा तथा पाश्चात्य साहित्य एवं संस्कृति में भी उनका रुझान रहेगा एवं कला के प्रति भी रुचि रहेगी।

सप्तम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथा समय सम्पन्न होगा तथा अनावश्यक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से सम्पन्न होगा तथा आप प्रेम विवाह भी कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा आकर्षण रहेगा। आप दोनों शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा सांसारिक महत्व के कार्यों को आपसी सलाह से पूर्ण करेंगे जिससे परस्पर विश्वास प्रेम एवं आकर्षण का भाव बना रहेगा।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार में होगा तथा आर्थिक रूप से उनकी स्थिति सुदृढ होगी। प्राप्ति होगी एवं अन्यत्र से भी उपहार स्वरूप बहुमूल्य वस्तुएं एवं उपकरण प्राप्त होंगे। सास ससुर से आपके संबंध सामान्य ही रहेंगे तथा दोनों ओर से औपचारिकताएं रहेंगी तथापि एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा तथा समयानुसार एक दूसरे को नैतिक या अन्य रूप से सहयोग के लिए तत्पर होंगे।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनका यथोचित ध्यान रखेंगी। साथ ही देवर एवं ननद भी उनके व्यवहार एवं वाणी से सन्तुष्ट रहेंगे एवं उन्हें पूर्ण सम्मान तथा सहयोग देंगे।

व्यापार या महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

## व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही शनि भी उच्च राशि में स्थित होकर दशम भाव में ही स्थित है। तुला राशि एवं शनि दोनों वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपकी कार्यक्षेत्र में बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया की प्रबलता रहेगी एवं श्रम साध्य का भाव अल्प होगा। कार्यक्षेत्र में आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय के इच्छुक होंगे तथा इसमें आपको सफलता भी मिलेगी।

दशम भाव में तुलाराशिस्थ शनि के प्रभाव से आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र वायुसेना, एयरलाइन्स कम्प्यूटर या इलैक्ट्रॉनिक्स, राजनीति, भारी उद्योग, फैक्टरी या विद्युत फैक्टरी में कार्य रासायनिक क्षेत्र, पेट्रोलियम एवं खान विभाग, खनिज विभाग, सन्देशवाहक आदि शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। यदि आप उपरोक्त विभागों एवं क्षेत्रों में अपने आजीविका कार्य का चयन करेंगे तो आपका भविष्य उज्ज्वल रहेगा तथा अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों से सुरक्षित रहेंगे तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। अतः यत्नपूर्वक आपको इन्हीं क्षेत्रों में कार्य करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए लोहे का कार्य, प्रिंटिंग प्रेस, भारी उद्योग, फैक्टरी, विद्युत उपकरणों का उत्पादन का क्रय विक्रय, पेट्रोल पम्प, शराब का व्यापार, खेती, बागवानी एवं खाद्यान्नों का व्यापार शुभ एवं उन्नतिदायक होगा। इन क्षेत्रों या वस्तुओं का व्यापार करने से आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त होगा एवं आर्थिक स्थिति में भी सुदृढ़ता रहेगी।

दशम भाव में उच्चस्थ शनि के प्रभाव से जीवन में आपको वांछित उन्नति एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा किसी सम्मानित एवं अधिकारप्राप्त पद को भी अर्जित करेंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य आपका पूर्ण प्रभाव एवं सम्मान रहेगा। साथ ही दूर दूर तक यश भी व्याप्त होगा। आप सामाजिक संस्थाओं या क्लबों आदि के भी सम्मानित सदस्य या पदाधिकारी हो सकते हैं। इस प्रकार आप अपनी अर्जित उपलब्धियों से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

आपके पिता पराक्रमी तेजस्वी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में वे प्रभावशाली व्यक्ति माने जाएंगे एवं सभी लोग उन्हें वांछित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे। आपकी उच्चशिक्षा के प्रति वे पूर्ण जागृत होंगे तथा इसका उच्चस्तर पर प्रबंध करके आपको एक योग्य नागरिक बनाएंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र की उन्नति एवं सफलता में भी उनका विशेष योगदान होगा। आप भी एक योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपनी योग्यता से कार्यक्षेत्र में उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में भी वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेदों की न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करके सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

## वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि द्वितीय भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु तृतीय भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि तृतीय भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु पंचम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि छठे भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी होकर 18 अक्टूबर को कर्क राशि सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि छठे भाव में आ जाएगी।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए आपको लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण परिश्रम का पूर्ण फल नहीं मिलेगा। इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे कार्यों में और सुधार करने की आवश्यकता है। कार्य स्थल पर अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

14 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से आपके व्यवसाय में उतार-चढ़ाव के योग बन रहे हैं। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर अपने परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। किसी के साथ मिलकर व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष बहुत अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु द्वितीयस्थ शनि के कारण आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे।

14 मई के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है अतः जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। परिवार के किसी सदस्य की बीमारी पर आपका धन व्यय हो सकता है। किसी को ऋण न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है और अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दुसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी।

पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भधान के लिए समय शुभ चल रहा है। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 29 मार्च के बाद आपको सामाजिक पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति



होगी। छोटे भाई-बहनों का भरपूर सहयोग मिलेगा।

### संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा एवं बच्चों की उन्नति होगी। यदि वह विवाह योग्य है, तो विवाह भी हो जाएगा।

14 मई के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। जिसके फलस्वरूप उनका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु वायु तत्व राशि में होने के कारण संक्रामक रोग, सांस या पेट से संबंधित रोग हो सकते हैं।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से उच्च शिक्षा प्राप्ति के इच्छुक विद्यार्थियों को अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल जाएगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षाधियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी और इंतजार करना पड़ेगा।

### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान के राहु छोटी-मोटी यात्राएं कराते रहेंगे। नवम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं भी करेंगे। धार्मिक गतिविधियों तथा तीर्थ यात्रा के भी योग बन रहे हैं। 14 मई के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तुओं का दान दें।
- माता-पिता, गुरु, साधू-संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वितीय भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें लग्न स्थान में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु छठे भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें सप्तम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें अष्टम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें।

02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। आप अपने कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलेंगे। इस अवधिमें आप कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे उसमें आपको सफलता मिलेगी। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपके कार्यों में सफलता की उम्मीद और बढ़ जायेगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव की संभावना बनी रहेगी। द्वितीयस्थराहु के प्रभाव से धन संचित करने में बाधा उत्पन्न होगी और धनागम के सारे मार्ग प्रभावित होंगे। आपको अपने अनावश्यक खर्चों पर अंकुश लगाना चाहिए। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें।

02 जून के बाद आपके धनागम के स्रोत खुलेंगे जिससे आप की आर्थिक स्थिति कुछ अच्छी होगी। परिवार में मांगलिक कार्यों में पैसा खर्च हो सकता है। आपको मित्र या जीवनसाथी के माध्यम से भी धन लाभ हो सकता है। 31 अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है अतः उस समय कोई बड़ा निवेश न करें।

### घर-परिवार, समाज

द्वितीय स्थान के राहु आपके परिवार में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न कर सकते हैं जिससे आपका परिवारिक माहौल खराब हो सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखना चाहिए नहीं तो परिवार में किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है। छठे स्थान केगुरु आपके मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध खराब कर सकते हैं।

02 जून के बाद जीवनसाथी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। यदि आप



अविवाहित हैं तो आपका विवाह हो जाएगा। तृतीयस्थ शनि पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से सामाजिक प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी।

### संतान

संतान के लिए यह वर्ष मिला जुला रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। उसका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है, जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

02 जून के बाद आपके बच्चे के लिए समय अच्छा हो रहा है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। यदि वह उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। यदि आपका दुसरा बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के लिहाज से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। छठे स्थान का गुरुछोटी-मोटी बीमारियों से स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसमजनित बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा।

02 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर शुभ हो रहा है। आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से मन में अच्छे विचार आएंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर में सफलता प्राप्ति के लिए आप को अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी विदेश या घर से दूर जाकर पढ़ाई करना चाहते हैं उनके लिए समय अनुकूल है।

02 जून के बाद का समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अनुकूल है। यदि कोई व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं तो उसमें सफलता प्राप्त होगी।

### यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में द्वादश स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

तृतीयस्थ शनि आपकी छोटी-मोटी यात्रा के साथ-साथ लम्बी यात्रा भी कराते रहेंगे।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगापरन्तु 02 जून से गुरु ग्रह का गोचर अच्छा हो रहा है। उस समय आप अपने

जीवनसाथी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

## वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं तृतीय भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष लग्न स्थान में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध श्रेष्ठ रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आप व्यापार में कुछ अच्छा करेंगे। अपने भाई या किसी के साथ मिलकर व्यापार कर सकते हैं, अच्छा लाभ होगा। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे। नौकरी करने वालों के लिए समय सामान्य रहेगा।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन सकती है अतः कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें पुराने चले आ रहे कार्य को और अच्छे ढंग से चलाएं। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। भूमि भवन से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को नुकसान भी हो सकता है।

### धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बढ़िया रहेगा। एकादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। निष्ठा के साथ धनार्जन करेंगे। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में पत्नी एवं भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

जून के बाद गुरु एवं शनि दोनों का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आय के मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इस समय किसी को उधार पैसा नहीं देना चाहिए नहीं तो पैसा डूब सकता है। निवेश के लिए यह समय उपयुक्त नहीं है अतः कोई निवेश न करें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर अनुकूल हो रहा है। उस समय आप बहुत अच्छी बचत कर सकते हैं।

### घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष ठीक-ठाक रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से आपका पत्नी के साथ समन्वय मधुर होगा। अविवाहित जातकों का विवाह संस्कार होसकता है। समाज में मान-सम्मान बना रहेगा।



जून के बाद समय अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान का शनि पारिवारिक अनुकूलता को भंग कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव में कमी होगी जिससे विरोधाभास व वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। परिवार में किसी के साथ वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न हो सकता है। माता-पिताका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव पूरे परिवार पर पड़ेगा।

### संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय काफी अच्छा है। यदि आपकी दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा।

26 जून के बाद आपको संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। आपके बच्चों का स्वास्थ्य अनुकूल नहीं होने के कारण उनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। उनको सफलता प्राप्ति के लिए लगातार कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता है। 26 नवम्बर के बाद समय काफी अच्छा हो जाएगा।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। लग्न स्थान का राहु अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित कर सकता है। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं परन्तु लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि से आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपको खान-पान के साथ साथ अपनी दिनचर्या भी सुव्यवस्थित रखनी चाहिए। सुबह सुबह टहलना भी आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

जून के बाद स्वास्थ्य के लिहाज से समय अच्छा नहीं रहेगा। शनि, राहु एवं गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कोई लम्बी बीमारी होने के संकेत मिल रहे हैं। यदि पहले से किसी बीमारी से पीड़ित हैं तो यह समय आपके लिए ज्यादा मुश्किल भरा हो सकता है। अष्टमस्थ गुरु जल तत्त्वराशि में होने कारण आप कफ, पाचन व पेट संबंधित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। इस समय के अंतराल में स्वास्थ्य संबंधित लापरवाही आपके लिए खतरा उत्पन्न कर सकती है। 26 नवम्बर के बाद नैसर्गिक रूप से आपके स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। आप परिश्रम के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे। विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध व्यवसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा के लिए अच्छा है।

जून के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। उस समय आपको परिश्रम का फल नहीं मिलेगा, जिससे आपके करियर में सफलता की उम्मीद कम ही लग रही है। उच्च शिक्षा

प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए 26 नवम्बर के बाद समय अच्छा हो रहा है।

### यात्रा-तबादला

तृतीयस्थ शनि की नवम भाव पर दृष्टि प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का अपने घर से दूर स्थानान्तरण हो सकता है। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। पत्नी के साथ हवनादि कार्य संपन्न करेंगे। जून के बाद अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा-पाठ व धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे।

- सूर्योदय से पहले उठकर सूर्य नमस्कार करें एवं सूर्य को अर्घ्य दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या लोहे के तवे का दान करें।
- गुरुवार के दिन केला या बेसन के लड्डू गरीबों में बांटे और व्रत रखें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ व्यावसायिक उन्नति के साथ होगा परन्तु फरवरी से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बन रही है। गुप्त शत्रु आपके कार्यों में रुकावट डालने की चेष्टा करेंगे। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके प्रतिकूल स्थान पर भी हो सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से कार्य व्यवसाय में कुछ सुधार होगा। कार्य-कुशलता एवं दक्षता के बल पर आप अपनी सभी समस्याओं का समाधान निकाल लेंगे साथ ही किसी बड़ी कम्पनी के साथ कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त होगा। प्रोपर्टी से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा।

### धन संपत्ति

सट्टा, ग्रेच्युटी या लॉटरी के माध्यम से आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। शेयर बाजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके संचित धन में कमी आ सकती है। आय के मार्ग भी प्रभावित हो सकते हैं।

राहु के गोचर के बाद कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कुछ कमजोर हो सकती है। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल होने से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

### घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से शुभ फलदायक रहेगा। पूरे परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान का शनि छोटे भाई-बहनों के लिए बहुत अच्छा है और उनकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेगा। समाज में आपका मान सम्मान बढ़ेगा। आपके बच्चों के विवाह की संभावना भी बन रही है। फरवरी के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध अच्छा नहीं रहेगा।

24 जुलाई के बाद चतुर्थ स्थान का शनि आपके पारिवारिक माहौल को खराब कर सकता है। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना व समर्पण में कमी आएगी जिसके कारण आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions





## संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए बहुत शुभ रहेगा। आपको बच्चों के बारे में शुभ समाचार मिलेंगे। आपके बच्चे शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी उन्नति करेंगे।

सन्तान इच्छुक जातकों के लिए गर्भाधान का शुभ योग बन रहा है। आपकी दूसरे संतान के लिए समय अच्छा नहीं है। वह अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कठिनाई महसूस करेगा।

## स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। लग्न स्थान का राहु स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा नहीं होता। अपने स्वास्थ्य को लेकर हमेशा सचेत रहना चाहिए क्योंकि राहु अचानक ही शारीरिक परेशानी देते हैं। खान-पान के साथ अपनी दिनचर्या को भी सुधारें।

24 मई के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। उस समय स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है। योगाभ्यास करना लाभप्रद रहेगा। पारिवारिक परेशानी के कारण दिमागी तनाव न पालें।

## करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको करियर में सफलता पाने के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की पढ़ाई के प्रति रूचि बनी रहेगी परन्तु पढ़ाई में व्यवधान भी बना रहेगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण जो व्यक्ति इलेक्ट्रॉनिक या सॉफ्टवेयर से संबंधित शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं उनके लिए समय काफी अच्छा है। तकनीकी शिक्षा या उच्च शिक्षा में भी आपको सफलता प्राप्त हो सकती है।

## यात्रा-तबादला

तृतीय एवं नवम भाव पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी अधिक यात्राएं होंगी। इन यात्राओं से आपको अच्छा लाभ भी प्राप्त होगा। फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा।

यह परिवर्तन आपके प्रतिकूल स्थान पर होगा। द्वादश स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। 26 जून के बाद आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। नवमस्थ गुरु के प्रभाव से आपकी धार्मिक यात्राएं भी हो सकती हैं।

## धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा परन्तु फरवरी के बाद मानसिक अस्थिरता के कारण पूजा-पाठ में मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई के बाद पंचम भाव

पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप गुरु मन्त्र ले कर साधना भी कर सकते हैं।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा सुश्रूषा करें।
- केला या पीली वस्तु का दान करें। वीरवार का व्रत करें एवं बेसन के लड्डू दान करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें या शनि ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



## वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि चतुर्थ भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं चतुर्थ भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु दशम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं नवम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

### व्यवसाय

वर्षारम्भ में दशमस्थ गुरु पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपका सहयोग करेंगे। 29 मार्च के बाद भाग्य आपके अनुकूल हो रहा है। आपके कार्य क्षेत्र में सफलता का प्रतिशत और बढ़ सकता है। द्वादशस्थ राहु के कारण आपके कार्यों में गुप्त शत्रु विघ्न उत्पन्न कर सकते हैं जिसके कारण आप कुछ परेशान हो सकते हैं परन्तु अपने बौद्धिक बल के द्वारा उन पर भी विजयी प्राप्त कर लेंगे और आपके कार्यों पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

25 अगस्त के बाद सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि प्रभाव से कार्य व्यवसाय में कुछ परेशानी आ सकती है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं तो साझेदार के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में बुद्धिमानी से काम लें। 05 अक्टूबर के बाद भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा।

### धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक रूप से सामान्यतः अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख सुविधा पर अधिक खर्च करेंगे। चतुर्थस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन एवं वाहन इत्यादि का भी सुख प्राप्त होगा। द्वादशस्थ राहु के कारण अचानक कुछ अनावश्यक खर्च भी आ सकते हैं। 29 मार्च के बाद अपने बच्चों की उच्च शिक्षा पर भी व्यय करेंगे।

25 अगस्त से द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

### घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के



संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा परन्तु 29 मार्च के बाद आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न हो सकती हैं। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

25 अगस्त से चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। माता पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मालुत पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

### संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा परन्तु मार्च के बाद बहुत अच्छा हो रहा है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। शिक्षा-दीक्षा के प्रति इनकी रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है।

08 अगस्त के बाद संतान संबंधित परेशानी हो सकती है। पंचम स्थान का शनि आपके बच्चों की शिक्षा में व्यवधान उत्पन्न कर सकते हैं।

### स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम नहीं रहेगा। स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहने के कारण मानसिक परेशानी बनी रहेगी। 29 मार्च के बाद गुरु ग्रह की दृष्टि लग्न पर होगी जिसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के प्रबल संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता व सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

25 अगस्त से अचानक आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है या मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान हो सकते हैं। सुबह सूर्योदय के पहले उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद रहेगा।

### करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त होगी। आपको मनोनुकूल नौकरी मिल सकती है। 29 मार्च के बाद विद्यार्थियों को करियर में सफलता मिलेगी।

शनि ग्रह के गोचर के बाद विद्यार्थियों को करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

### यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी। 29 मार्च के बाद छोटी यात्राएं होंगी। ये यात्राएं आपके लिए अनुकूल व उन्नति कारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

25 अगस्त के बाद आप पूरे परिवार के साथ किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। अपने जन्म स्थल से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

### धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

वर्ष के प्रारम्भ में घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा-पाठ सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। 25 अगस्त से पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान एवं साधना अधिक करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं एवं राहु के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

## दशा विश्लेषण

**महादशा :- शनि**  
**( 14/12/2019 - 14/12/2038 )**

शनि की महादशा उन्नीस वर्ष की है। आपके जीवन में यह 14/12/2019 को आरम्भ और 14/12/2038 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में शनि दशम भाव में स्थित है। यह स्वभाव से एक अशुभ ग्रह है, किन्तु अत्यन्त शक्तिशाली है और शुभ-अशुभ दोनों का कार्य करता है। इसे बाधक ग्रह कहा जाता है जो जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। फल की प्राप्ति में यह विलम्ब करता है, पर उससे वंचित नहीं करता। यह जातक को लक्ष्य की पूर्ति के लिए कठिन परिश्रम करने को प्रेरित करता है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि 12 वें, 4 थे तथा 7 वें भाव पर है और यह इन भावों के कार्य को प्रभावित कर रहा है। दशम भाव, जिसमें यह स्थित है, प्रतिष्ठा, सामाजिक सम्मान, सफलता, आदर, ख्याति, उत्तरदायित्व, सांसारिक गतिविधि, पदोन्नति, प्रगति, उच्च पद, सरकार से सम्मान का द्योतक है।

**स्वास्थ्य :**

इस महादशा के दौरान आपको स्वास्थ्य सम्बन्धी कोई गम्भीर समस्या नहीं होगी, न ही कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना होगी और आप सामान्यतया कार्यों को पूरा करने की स्थिति में होंगे। किन्तु, आपको कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाने के प्रति सतर्क तथा सावधान रहने की सलाह दी जाती है क्योंकि नीच का शनि मस्तिष्क को प्रभावित करता है।

**धन सम्पत्ति :**

दशम अर्थात् व्यवसाय व जीविका के भाव में स्थित शनि की 12वें भाव पर दृष्टि है। इसलिए आपको चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि के प्रति सतर्क रहना चाहिए क्योंकि कुछ हानि की सम्भावना है।

**व्यवसाय :**

शनि दशम भाव में स्थित है और उसे शक्ति प्रदान कर रहा है। आपको आधिकारिक पद की प्राप्ति की सम्भावना है। इस दशा के दौरान आप शासक हो सकते हैं-अथवा आपको मन्त्री पद की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने प्रभुत्व तथा सेवा का प्रदर्शन करेंगे।

**पारिवारिक जीवन :**

दशम भाव से शनि की 12वें, 4थे तथा 7वें भावों अर्थात् शयन स्थान, 'शुभस्थान' और जीवनसाथी के भावों पर दृष्टि के फलस्वरूप आपको एक सुन्दर तथा सहायक जीवन साथी की प्राप्ति होगी, किन्तु, जीवन में विवाद हमेशा होते रहेंगे जिससे आपको मानसिक अशान्ति तथा निराशा बनी रहेगी।

**शिक्षा/प्रशिक्षण :**

शनि की दशा के दौरान आप निराश रहेंगे, आप में नकारात्मक भावना उत्पन्न



होगी और आपकी शिक्षा में बाधाएं आएंगी।



**FUTUREPOINT**  
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020  
Web: [www.futurepointindia.com](http://www.futurepointindia.com), e-mail: [mail@futurepointindia.com](mailto:mail@futurepointindia.com)

**अंतर्दशा :- शनि - बुध  
( 17/12/2022 - 26/08/2025 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 14/12/2019 को प्रारंभ होकर 14/12/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 17/12/2022 को प्रारंभ होकर 26/08/2025 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। दशम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको सब कार्यों में सफलता मिलेगी। समाजसेवा, दान-धर्म और आध्यात्मिक कार्यों में रुचि लेंगे। विभिन्न स्थानों से सम्मान प्राप्त होगा, साख अच्छी रहेगी। स्पष्टवादी होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के वैदिक मंत्र के 9000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - केतु  
( 26/08/2025 - 05/10/2026 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/12/2019 को प्रारंभ होकर 14/12/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 26/08/2025 को प्रारंभ होकर 05/10/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। केतु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है। एकादश भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सट्टेबाजी, लॉटरी, शेयर, आदि से अचानक धन कमा सकते हैं। धन को संचित करेंगे। बुद्धिमान और प्रसन्न होंगे। विभिन्न तीर्थों आदि की यात्रा का आनंद लेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - शुक्र  
( 05/10/2026 - 05/12/2029 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/12/2019 को प्रारंभ होकर 14/12/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 05/10/2026 को प्रारंभ होकर 05/12/2029 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति। उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी खूब यात्राएं होंगी। इस कारण बहुत से व्यक्तियों से मित्रता होगी। मित्रों में महिलाएं भी होंगी। लोकप्रिय बनेंगे, खूब धन कमाएंगे। सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। यह अंतर्दशा बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शनि - सूर्य  
( 05/12/2029 - 17/11/2030 )**

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 14/12/2019 को प्रारंभ होकर 14/12/2038 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 05/12/2029 को प्रारंभ होकर 17/11/2030 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। दशम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के चौथे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके कार्यों में कुछ बाधाएं आएंगी मगर वाहन सुख, बुद्धिमत्ता, प्रसिद्धि और उच्चपद का संकेत है। पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। लोकप्रिय बनेंगे। संगीत में रुचि होगी। व्यक्तित्व आकर्षक होगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।